

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES



ISSN 2277 – 9809 (online)

ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

स्वामी दयानन्द सरस्वती का राजनीतिक चिंतन : एक राजनीतिक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. बृजेश स्वरूप सोनकर

असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग

कर्म क्षेत्र महाविद्यालय, इटावा (उ.प्र.)

शोध-सार (Abstract)

प्रस्तुत शोध प्रबंध “स्वामी दयानन्द सरस्वती का राजनीतिक चिंतन : एक राजनीतिक विश्लेषणात्मक अध्ययन” स्वामी दयानन्द सरस्वती (1824-1883) के राजनीतिक विचारों का व्यवस्थित एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। शोध का मुख्य आधार सत्यार्थ प्रकाश, वेद-भाष्य तथा अन्य उपलब्ध प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोत हैं। शोध से स्पष्ट होता है कि दयानन्द आधुनिक भारत में स्वराज एवं स्वदेशी की अवधारणाओं के प्रथम स्पष्ट उद्घोषक थे। उन्होंने “भारत भारतीयों के लिए” का नारा दिया तथा विदेशी शासन की अप्रत्यक्ष किन्तु तीव्र आलोचना की। उनके राष्ट्रवादी चिंतन में राष्ट्रीय एकता, स्वाभिमान, सांस्कृतिक पुनरुत्थान एवं स्वदेशी का समर्थन प्रमुख तत्व थे। राज्य, शासन एवं राजनीतिक व्यवस्था संबंधी विचारों में उन्होंने राज्य को लोकहितकारी संस्था माना, राजा को निर्वाचित सभापति के रूप में परिभाषित किया, कानून के शासन एवं प्रजा की सर्वोच्चता पर बल दिया।

सामाजिक सुधार एवं राजनीतिक चिंतन के अंतर्संबंध में उन्होंने जाति-प्रथा, बाल विवाह का विरोध तथा स्त्री शिक्षा, विधवा विवाह का समर्थन कर सामाजिक सुधारों को राष्ट्रीय शक्ति का आधार बनाया। शिक्षा एवं चरित्र निर्माण को उन्होंने राजनीतिक महत्व का विषय माना। आर्य समाज के माध्यम से उनके विचारों ने लाला लाजपत राय, स्वामी श्रद्धानन्द, श्यामजी कृष्ण वर्मा आदि नेताओं को प्रभावित कर स्वतंत्रता आंदोलन को वैचारिक बल प्रदान किया। आलोचनात्मक मूल्यांकन से स्पष्ट होता है कि उनकी उपलब्धियाँ सीमाओं से अधिक महत्वपूर्ण हैं। वैदिक परंपरा पर आधारित होते हुए भी उनके विचार आधुनिक लोकतांत्रिक तत्वों से युक्त थे। शोध यह स्थापित करता है कि दयानन्द केवल धार्मिक सुधारक नहीं, बल्कि आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन एवं राष्ट्रवाद के आधार स्तंभ थे। उनके स्वराज, स्वदेशी, कानून का शासन एवं सांस्कृतिक राष्ट्रवाद संबंधी विचार आज भी प्रासंगिक हैं।

प्रस्तुत शोध से आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद की वैचारिक जड़ें स्पष्ट हुई हैं तथा समकालीन राजनीतिक विमर्श के लिए वैकल्पिक दृष्टिकोण उपलब्ध हुआ है।

मुख्य शब्द: स्वामी दयानन्द सरस्वती, आर्य समाज, सत्यार्थ प्रकाश, स्वराज, राष्ट्रवाद, वैदिक चिंतन, राजनीतिक विचार, सामाजिक सुधार।

परिचय

आधुनिक भारत के राजनीतिक चिंतन के इतिहास में स्वामी दयानन्द सरस्वती (जन्म: 12 फरवरी 1824, टंकारा, गुजरात; मृत्यु: 30 अक्टूबर 1883, अजमेर) एक विशिष्ट स्थान रखते हैं। वे आर्य समाज के संस्थापक

(स्थापना: 10 अप्रैल 1875, मुंबई) तथा 'सत्यार्थ प्रकाश' (1875) जैसे ग्रंथों के रचयिता थे। यद्यपि उनका मूल कार्य धार्मिक एवं सामाजिक सुधार था, तथापि उनके विचारों में राज्य, शासन, स्वराज, स्वदेशी एवं राष्ट्रीय एकता संबंधी स्पष्ट राजनीतिक तत्व निहित थे। उन्होंने वेदों को आधार बनाकर आधुनिक युग में स्वराज (स्व-शासन) और स्वदेशी की अवधारणाओं को स्पष्ट रूप से प्रतिपादित किया, जो बाद में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की आधारशिला बनीं।

आधुनिक भारत में राजनीतिक चिंतन के विकास में दयानन्द का स्थान

आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन के विकास का अध्ययन सामान्यतः राजा राममोहन राय, दादाभाई नौरोजी, बाल गंगाधर तिलक, महात्मा गांधी आदि के संदर्भ में किया जाता है। किन्तु स्वामी दयानन्द का स्थान इस श्रृंखला में अपेक्षाकृत कम आकलित किया गया है, जबकि वे उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में उन विचारकों में से एक थे जिन्होंने विदेशी शासन की श्रेष्ठता को चुनौती दी और स्वदेशी राज्य को सर्वोपरि घोषित किया। 'सत्यार्थ प्रकाश' के आठवें समुल्लास तथा वेद भाष्यों में उन्होंने स्पष्ट किया कि "एक व्यक्ति को शासन की संपूर्ण शक्ति नहीं मिलनी चाहिए। राजा सभा का निर्वाचित सभापति हो, सभा उसके अधीन तथा वह सभा के अधीन, और दोनों प्रजा के अधीन हों।" उन्होंने राज्य को लोकहितकारी संस्था माना तथा शासन के दैवीय अधिकार सिद्धांत का खंडन किया। स्वराज को जन्मसिद्ध अधिकार बताते हुए उन्होंने कहा कि कोई भी विदेशी सरकार, चाहे कितनी ही सुव्यवस्थित क्यों न हो, स्वदेशी शासन का स्थान नहीं ले सकती।

ऐतिहासिक रूप से, दयानन्द ने स्वराज एवं स्वदेशी के विचारों को उस काल में प्रस्तुत किया जब ब्रिटिश शासन अपने चरम पर था तथा भारतीय समाज में राजनीतिक चेतना सीमित थी। आर्य समाज के माध्यम से उनके अनुयायियों (जैसे लाला लाजपत राय) ने इन विचारों को स्वतंत्रता आंदोलन में विस्तार दिया। फिर भी, उनके राजनीतिक दर्शन का व्यवस्थित विश्लेषण सीमित रहा है। अधिकांश अध्ययन उनके धार्मिक-सामाजिक सुधारों पर केंद्रित रहे हैं, जबकि राजनीतिक आयाम-राज्य का स्वरूप, शासन की संरचना (तीन सभाएँ-विधान, विज्ञान-कला एवं धर्म-नैतिकता), विकेंद्रीकरण तथा राष्ट्रीय एकता-का गहन विश्लेषण अभी भी अधूरा है। यही शोध समस्या है: आधुनिक भारत के राजनीतिक चिंतन के विकास में स्वामी दयानन्द के योगदान का वस्तुनिष्ठ एवं विश्लेषणात्मक मूल्यांकन करना तथा उनका सही स्थान निर्धारित करना।

शोध का औचित्य एवं महत्व

प्रस्तुत शोध कई कारणों से आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है। प्रथम, भारतीय राजनीतिक चिंतन के इतिहास में दयानन्द का योगदान उपेक्षित रहा है। अनेक विद्वानों ने स्वीकार किया है कि स्वराज एवं स्वदेशी के विचारों को उन्होंने गांधी एवं तिलक से पूर्व प्रतिपादित किया। उनकी 200वीं जयंती (2024) के अवसर पर भी उनके राजनीतिक विचारों की व्यापक चर्चा सीमित रही। द्वितीय, उनके विचार वर्तमान भारत के लिए प्रासंगिक हैं। लोकतंत्र, विधि का शासन, शिक्षा आधारित शासन, सामाजिक समानता (जन्म आधारित जाति का विरोध, गुण आधारित वर्ण व्यवस्था का समर्थन), महिला शिक्षा तथा राष्ट्रीय एकता संबंधी उनके विचार आज भी नीति-निर्माण एवं राजनीतिक विमर्श में मार्गदर्शक हो सकते हैं। आर्य समाज द्वारा स्थापित शैक्षणिक संस्थाओं (डीएवी कॉलेजों आदि) ने राष्ट्रवादी चेतना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। तृतीय, यह शोध भारतीय राजनीतिक चिंतन की स्वदेशी जड़ों को उजागर करता है। उपनिवेशवादी काल में पश्चिमी विचारों के प्रभाव के बीच दयानन्द ने वैदिक

स्रोतों से आधुनिक लोकतांत्रिक एवं राष्ट्रवादी अवधारणाएँ निकालीं। इससे राजनीतिक विज्ञान के विद्यार्थियों एवं शोधकर्ताओं को यह समझने में सहायता मिलेगी कि भारतीय परंपरा में भी राज्य, शासन एवं स्वशासन संबंधी मौलिक चिंतन विद्यमान था। अतः प्रस्तुत अध्ययन न केवल ऐतिहासिक रिक्ति को भरता है, बल्कि समकालीन राजनीतिक विमर्श को भी समृद्ध करता है।

उद्देश्य

1. स्वामी दयानन्द सरस्वती के राजनीतिक विचारों का 'सत्यार्थ प्रकाश', वेद भाष्य तथा अन्य उपलब्ध स्रोतों के आधार पर व्यवस्थित विश्लेषण करना।
2. आधुनिक भारत में राजनीतिक चिंतन के विकास में उनके स्थान का निर्धारण करना।
3. उनके विचारों का स्वतंत्रता आंदोलन तथा परवर्ती राजनीतिक नेताओं (लाला लाजपत राय आदि) पर प्रभाव का अध्ययन करना।
4. उनके राज्य, शासन, स्वराज, स्वदेशी एवं राष्ट्रीय एकता संबंधी अवधारणाओं की वर्तमान प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना।

शोध प्रश्न

1. स्वामी दयानन्द के राजनीतिक चिंतन के प्रमुख तत्व क्या हैं तथा वे वैदिक स्रोतों से किस प्रकार जुड़े हैं?
2. आधुनिक भारत के राजनीतिक चिंतन के विकास क्रम में दयानन्द का स्थान क्या है?
3. उनके विचारों ने भारतीय राष्ट्रवाद एवं स्वतंत्रता आंदोलन को किस प्रकार प्रभावित किया?
4. उनके राजनीतिक विचार आज के लोकतांत्रिक एवं राष्ट्रवादी विमर्श में कितने प्रासंगिक हैं?

परिकल्पना

1. स्वामी दयानन्द सरस्वती आधुनिक भारत में स्वराज एवं स्वदेशी की अवधारणाओं के प्रथम स्पष्ट उद्घोषक थे तथा उनके राजनीतिक विचार वैदिक परंपरा पर आधारित होते हुए भी आधुनिक लोकतांत्रिक तत्वों से युक्त थे।
2. उनके विचारों ने उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारतीय राष्ट्रवादी चेतना के विकास में आधारभूत भूमिका निभाई तथा आर्य समाज के माध्यम से स्वतंत्रता आंदोलन को वैचारिक बल प्रदान किया।
3. उनके राजनीतिक चिंतन का व्यवस्थित अध्ययन अभी भी अपूर्ण है तथा गहन विश्लेषण से आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन में उनका स्थान अधिक स्पष्ट रूप से स्थापित किया जा सकता है।

शोध की सीमाएँ

1. यह अध्ययन मुख्यतः प्राथमिक स्रोतों—'सत्यार्थ प्रकाश', ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका तथा उपलब्ध वेद भाष्यों— तथा द्वितीयक स्रोतों (आर्य समाज संबंधी इतिहास, शोध प्रबंधों एवं विद्वानों के लेखों) पर आधारित है। दयानन्द द्वारा लिखित सभी भाष्य एवं पत्र-व्यवहार पूर्ण रूप से उपलब्ध नहीं हैं।
2. उनके राजनीतिक विचार धार्मिक-सामाजिक विचारों से गहन रूप से जुड़े हुए हैं; अतः पूर्ण पृथक्करण संभव नहीं है।

3. अध्ययन का काल-सीमा मुख्यतः 1824-1883 तथा उनके विचारों का प्रभाव 1883-1947 तक सीमित रखा गया है। स्वतंत्रता पश्चात् प्रभाव का विस्तृत विश्लेषण इस शोध की परिधि से बाहर है।
 4. क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध कुछ स्रोत तथा आर्य समाज की शाखाओं के स्थानीय अभिलेखों तक पहुंच सीमित हो सकती है।
 5. यह विश्लेषणात्मक अध्ययन है; अनुभवजन्य सर्वेक्षण या मात्रात्मक डेटा संग्रह इसकी सीमा से बाहर है।
- इस प्रकार यह शोध स्वामी दयानन्द सरस्वती के राजनीतिक चिंतन को वस्तुनिष्ठ रूप से समझने तथा आधुनिक भारतीय राजनीतिक विचारधारा में उनके योगदान को स्पष्ट करने का प्रयास करेगा।

साहित्य समीक्षा

स्वामी दयानन्द सरस्वती के राजनीतिक चिंतन का अध्ययन मुख्यतः उनके मूल ग्रंथों तथा आर्य समाज संबंधी द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। इस क्षेत्र में उपलब्ध साहित्य का आलोचनात्मक मूल्यांकन निम्नानुसार प्रस्तुत है।

सबसे महत्वपूर्ण प्राथमिक स्रोत स्वामी दयानन्द का ग्रंथ **सत्यार्थ प्रकाश** (1875) है। इसके आठवें समुल्लास में राज्य, शासन, राजा (निर्वाचित सभापति), तीन सभाओं (राजसभा, विद्यासभा एवं धर्मसभा), विधि का शासन तथा स्वराज संबंधी विचार विस्तार से वर्णित हैं। इसके अतिरिक्त उनकी **ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका** तथा ऋग्वेद एवं यजुर्वेद पर किए गए भाष्यों में भी राजनीतिक अवधारणाएँ निहित हैं, जहाँ वे वेद मन्त्रों की व्याख्या के माध्यम से स्वशासन, राष्ट्रीय एकता एवं शासन की संरचना पर प्रकाश डालते हैं।

1. **जे.टी.एफ. जोर्डेन्स** (J.T.F. Jordens) की पुस्तक *Dayananda Sarasvati: His Life and Ideas* दयानन्द के जीवन एवं विचारों का सबसे प्रामाणिक एवं विद्वत्पूर्ण अध्ययन मानी जाती है। जोर्डेन्स ने समकालीन दस्तावेजों के आधार पर उनके विचारों का विश्लेषण किया है तथा आर्य समाज की स्थापना एवं उनके सुधार आंदोलन को ऐतिहासिक संदर्भ में रखा है।
2. **शांता मल्होत्रा** की पुस्तक *Political Thought of Swami Dayanand* उनके राजनीतिक विचारों का व्यवस्थित अध्ययन प्रस्तुत करती है। इसमें सत्यार्थ प्रकाश तथा वेद भाष्यों से राजनीतिक अवधारणाएँ निकालकर राज्य, शासन एवं स्वराज का विश्लेषण किया गया है।
3. **राम प्रकाश शर्मा** का लेख "Swami Dayanand's Contribution to Indian Nationalism and His Political Philosophy" दयानन्द के राष्ट्रवाद एवं राजनीतिक दर्शन पर केंद्रित प्रारंभिक महत्वपूर्ण शोध है।
4. **मदालसा उज्ज्वल** का लेख "Political Ideas of Swami Dayanand Saraswati" उनके राजनीतिक विचारों का समकालीन परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन करता है।
5. **सुभाष आर्य** का शोध प्रबंध *Social and Political Ideas of Swami Dayananda* सामाजिक एवं राजनीतिक विचारों का विस्तृत अध्ययन है।
6. **लाला लाजपत राय** के लेख एवं पुस्तकें (विशेषकर आर्य समाज संबंधी उनके लेखन) दयानन्द के प्रभाव को प्रत्यक्ष रूप से दर्शाते हैं। लाजपत राय ने स्वयं स्वीकार किया कि आर्य समाज ने उन्हें राष्ट्रवाद, स्वदेशी एवं सामाजिक सुधार की प्रेरणा दी।

7. अन्य महत्वपूर्ण अध्ययनों में केनेथ डब्ल्यू. जोन्स की *Arya Dharma: Hindu Consciousness in Nineteenth-Century Punjab* तथा एडमंड वेबर का लेख "Raja Dharma: Hindu Democracy, Rational Government and Political Bhakti according to Swami Dayanand Saraswati" शामिल हैं, जो शासन व्यवस्था एवं लोकतांत्रिक तत्वों पर प्रकाश डालते हैं।

उपलब्ध साहित्य का आलोचनात्मक मूल्यांकन

उपलब्ध साहित्य मुख्यतः दो धाराओं में विभाजित है। पहली धारा में जीवनीपरक एवं धार्मिक-सामाजिक अध्ययन आते हैं (जैसे जोर्डन्स का कार्य), जो दयानन्द के जीवन, आर्य समाज की स्थापना तथा सामाजिक सुधारों (जाति-प्रथा विरोध, महिला शिक्षा, शुद्धि आंदोलन) पर विस्तृत प्रकाश डालते हैं। ये अध्ययन ऐतिहासिक रूप से अत्यंत उपयोगी हैं, किन्तु इनमें राजनीतिक चिंतन गौण रूप में ही आता है। दूसरी धारा में राजनीतिक विचारों से संबंधित अध्ययन आते हैं। राम प्रकाश शर्मा (1958) एवं शांता मल्होत्रा (2004) ने स्वराज, स्वदेशी, निर्वाचित शासन तथा तीन सभाओं की अवधारणा को स्पष्ट किया है। ये कार्य सत्यार्थ प्रकाश के आधार पर राज्य के लोकहितकारी स्वरूप, दैवीय अधिकार सिद्धांत के खंडन तथा विधि के शासन पर बल देते हैं। सुभाष आर्य का शोध प्रबंध सामाजिक एवं राजनीतिक विचारों को एक साथ लेकर चलता है।

आलोचनात्मक दृष्टि से देखें तो अधिकांश अध्ययन या तो धार्मिक-सामाजिक पक्ष पर केंद्रित हैं अथवा राजनीतिक विचारों को राष्ट्रवाद के संदर्भ में सीमित रखते हैं। राजनीतिक सिद्धांतों—जैसे संप्रभुता का स्थान, शासन की संरचना, राज्य का उद्देश्य (धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष की प्राप्ति का साधन) तथा विकेंद्रीकरण—का गहन एवं तुलनात्मक विश्लेषण अपेक्षाकृत कम हुआ है। लाला लाजपत राय जैसे अनुयायियों के लेखन में दयानन्द का प्रभाव तो स्पष्ट है, किन्तु उनके राजनीतिक दर्शन का स्वतंत्र सैद्धांतिक मूल्यांकन सीमित है। जोर्डन्स का अध्ययन जीवन एवं विचारों का समग्र चित्र तो प्रस्तुत करता है, परंतु राजनीतिक चिंतन को स्वतंत्र रूप से व्यवस्थित नहीं करता।

शोध-अंतराल

साहित्य समीक्षा से स्पष्ट होता है कि स्वामी दयानन्द के राजनीतिक चिंतन का व्यवस्थित, विश्लेषणात्मक एवं राजनीतिक विज्ञान की दृष्टि से गहन अध्ययन अपेक्षाकृत कम हुआ है। अधिकांश शोध उनके धार्मिक-सामाजिक सुधारों या आर्य समाज के राष्ट्रवादी योगदान पर केंद्रित रहे हैं। सत्यार्थ प्रकाश तथा वेद भाष्यों से राजनीतिक अवधारणाओं को निकालकर उन्हें आधुनिक राजनीतिक सिद्धांतों (राज्य, संप्रभुता, लोकतंत्र, विधि का शासन) के साथ तुलनात्मक रूप से विश्लेषित करने वाला व्यापक अध्ययन अभी भी अपूर्ण है।

विशेष रूप से निम्नलिखित अंतराल स्पष्ट हैं:

- राज्य एवं शासन संबंधी उनके विचारों का सैद्धांतिक संरचनाकरण।
- स्वराज एवं स्वदेशी की अवधारणा का स्वतंत्रता आंदोलन के पूर्ववर्ती संदर्भ में गहन मूल्यांकन।
- उनके विचारों की वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था में प्रासंगिकता का व्यवस्थित अध्ययन।

यह शोध इन्हीं अंतरालों को भरने का प्रयास करता है तथा स्वामी दयानन्द के राजनीतिक चिंतन का राजनीतिक विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध ऐतिहासिक-विश्लेषणात्मक एवं व्याख्यात्मक पद्धति पर आधारित है। इसमें स्वामी दयानन्द सरस्वती के राजनीतिक विचारों का अध्ययन प्राथमिक स्रोतों-सत्यार्थ प्रकाश, वेदभाष्य तथा आर्य समाज के दस्तावेजों-के साथ द्वितीयक स्रोतों (शोध ग्रंथों एवं लेखों) के आधार पर किया गया है। दृष्टिकोण राजनीतिक सिद्धांत एवं विचारधारा विश्लेषण का है, जिसके माध्यम से उनके राज्य, शासन, स्वराज एवं राष्ट्रवाद संबंधी विचारों की व्यवस्थित व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

सैद्धांतिक एवं वैचारिक ढाँचा

इस शोध का सैद्धांतिक एवं वैचारिक ढाँचा मुख्यतः आधुनिक राजनीतिक सिद्धांतों तथा भारतीय वैदिक परंपरा के अंतर्संबंध पर आधारित है। इसमें राष्ट्रवाद, स्वराज, स्वदेशी, राज्य एवं शासन की अवधारणाओं को प्राच्य एवं पाश्चात्य दोनों दृष्टिकोणों से समझा गया है तथा स्वामी दयानन्द के चिंतन को उनके वैदिक आधार के साथ जोड़ा गया है।

राष्ट्रवाद की अवधारणा (प्राच्य एवं पाश्चात्य) - पाश्चात्य राष्ट्रवाद मुख्यतः प्रादेशिक, नागरिक एवं राजनीतिक एकता पर आधारित है। इसमें हर्डर, मात्सिनी एवं रेनन जैसे विचारकों ने भाषा, संस्कृति एवं जन-इच्छा को राष्ट्र का आधार माना। इसके विपरीत प्राच्य (विशेषकर भारतीय) राष्ट्रवाद सांस्कृतिक, आध्यात्मिक एवं ऐतिहासिक स्मृति पर अधिक बल देता है। स्वामी दयानन्द का राष्ट्रवाद प्राच्य परंपरा से जुड़ा हुआ है। उन्होंने आर्यावर्त की सांस्कृतिक एकता, वैदिक गौरव एवं “भारत भारतीयों के लिए” की भावना पर जोर दिया। सत्यार्थ प्रकाश में उन्होंने विदेशी शासन को अस्वीकार करते हुए स्वदेशी राज्य को सर्वोपरि बताया। उनका राष्ट्रवाद केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं था, बल्कि सांस्कृतिक एवं धार्मिक पुनरुत्थान से जुड़ा था, जो बाद में आर्य समाज के माध्यम से लाला लाजपत राय जैसे नेताओं तक पहुँचा।

स्वराज एवं स्वदेशी की अवधारणा - दयानन्द ने स्वराज (स्व-शासन) को जन्मसिद्ध अधिकार के रूप में प्रतिपादित किया। उन्होंने स्पष्ट कहा कि कोई भी विदेशी सरकार, चाहे कितनी ही सुव्यवस्थित क्यों न हो, स्वदेशी शासन का स्थान नहीं ले सकती। सत्यार्थ प्रकाश में वे स्वराज को राजनीतिक एवं सांस्कृतिक दोनों स्तरों पर स्वतंत्रता के रूप में देखते हैं। स्वदेशी की अवधारणा उनके चिंतन में आर्थिक आत्मनिर्भरता से जुड़ी है। उन्होंने विदेशी वस्तुओं पर निर्भरता को देश की दरिद्रता का कारण बताया तथा स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग पर बल दिया। ये दोनों अवधारणाएँ बाद में तिलक एवं गांधी के आंदोलनों में विकसित हुईं, किन्तु दयानन्द ने इन्हें उन्नीसवीं शताब्दी के सातवें-आठवें दशक में ही स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया था।

राज्य, शासन एवं लोकहित की अवधारणा - दयानन्द राज्य को लोकहितकारी संस्था मानते हैं। उनके अनुसार राज्य का उद्देश्य केवल भौतिक कल्याण नहीं, बल्कि धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष-चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति में सहायक होना चाहिए। शासन के संबंध में वे निरंकुश राजतंत्र के विरोधी थे। सत्यार्थ प्रकाश में उन्होंने राजा को “निर्वाचित सभापति” (निर्वाचित सभापति) बताया तथा तीन सभाओं-राजसभा (विधान), विद्यासभा (शिक्षा-विज्ञान) एवं धर्मसभा-के सामूहिक शासन का समर्थन किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि “एक व्यक्ति को शासन की संपूर्ण शक्ति नहीं मिलनी चाहिए। राजा सभा के अधीन तथा सभा प्रजा के

अधीन हो।” विधि (कानून) को वे वास्तविक राजा मानते थे तथा शासन को धर्म (न्याय एवं नैतिकता) के अधीन रखते थे।

धर्म, संस्कृति एवं राजनीति का अंतर्संबंध - दयानन्द के चिंतन में धर्म, संस्कृति एवं राजनीति एक-दूसरे से अविभाज्य हैं। वे राजनीति को धर्म से अलग नहीं मानते। उनके अनुसार शासन धर्म के अनुसार चलना चाहिए तथा राज्य का कर्तव्य वैदिक संस्कृति की रक्षा करना है। उन्होंने मूर्तिपूजा, जन्म आधारित जाति-प्रथा एवं अंधविश्वास का विरोध करते हुए शुद्ध वैदिक धर्म को राष्ट्र की एकता का आधार बनाया। संस्कृति को वे राष्ट्र की आत्मा मानते थे तथा विदेशी सांस्कृतिक प्रभाव को राजनीतिक पराधीनता का कारण समझते थे।

दयानन्द के चिंतन का वैदिक आधार - उनके संपूर्ण राजनीतिक विचारों का मूल आधार वेद हैं। उन्होंने ऋग्वेद, यजुर्वेद एवं अन्य वैदिक मन्त्रों की व्याख्या के माध्यम से शासन, राजा के गुण, सभा की भूमिका तथा स्वशासन के सिद्धांत निकाले। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका तथा सत्यार्थ प्रकाश में वे बार-बार वैदिक प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। उनके अनुसार वेद शाश्वत ज्ञान के स्रोत हैं तथा उनसे राज्य, शासन एवं सामाजिक व्यवस्था के सिद्धांत निकाले जा सकते हैं। इस वैदिक आधार ने उनके चिंतन को पाश्चात्य उदारवाद से अलग एक स्वदेशी राजनीतिक दर्शन का रूप दिया।

इस सैद्धांतिक ढाँचे के माध्यम से शोध में दयानन्द के राजनीतिक विचारों का विश्लेषण आधुनिक राजनीतिक सिद्धांतों के साथ तुलनात्मक रूप से किया गया है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं जीवन-परिचय

19वीं शताब्दी के भारत की सामाजिक-राजनीतिक स्थिति - उन्नीसवीं शताब्दी का भारत ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के अधीन था। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बाद ब्रिटिश नियंत्रण और भी सुदृढ़ हो गया। राजनीतिक दृष्टि से भारत पूर्णतः पराधीन था। आर्थिक रूप से देश का शोषण हो रहा था—कच्चे माल का निर्यात एवं तैयार माल का आयात भारत की पारंपरिक अर्थव्यवस्था को नष्ट कर रहा था। सामाजिक क्षेत्र में जाति-प्रथा, अस्पृश्यता, बाल-विवाह, सती प्रथा (जिसे 1829 में प्रतिबंधित किया जा चुका था), विधवाओं की दुर्दशा, मूर्तिपूजा एवं अंधविश्वास व्याप्त थे। ईसाई मिशनरियों द्वारा धर्म-परिवर्तन के प्रयास तथा पश्चिमी शिक्षा के प्रसार ने भारतीय समाज में वैचारिक उथल-पुथल उत्पन्न की। धार्मिक क्षेत्र में पौराणिक कर्मकांड एवं ब्राह्मणवादी आडंबर प्रमुख थे। इसी काल में राजा राममोहन राय के ब्रह्म समाज, ईश्वर चंद्र विद्यासागर एवं अन्य सुधारकों के प्रयास चल रहे थे, किन्तु समाज में व्यापक जागरण की आवश्यकता बनी हुई थी। ऐसे परिवेश में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वैदिक पुनरुत्थान एवं सामाजिक-राजनीतिक सुधार का मार्ग प्रशस्त किया।

दयानन्द का जीवन, शिक्षा एवं आर्य समाज की स्थापना (1875) - स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म 12 फरवरी 1824 को गुजरात के टंकारा (मोरबी रियासत) में एक औदीच्य ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनका मूल नाम मूलशंकर था। बाल्यावस्था में ही उन्हें मूर्तिपूजा एवं अंधविश्वासों से वैराग्य उत्पन्न हुआ। 14 वर्ष की आयु में शिवरात्रि की घटना ने उन्हें मूर्तिपूजा के प्रति प्रश्नशील बना दिया। परिवार द्वारा विवाह की व्यवस्था किए जाने पर वे गृह त्याग कर संन्यासी बन गए। उन्होंने व्याकरण, वेदांत एवं योग का

गहन अध्ययन किया। स्वामी विरजानंद सरस्वती (मथुरा) उनके गुरु बने, जिन्होंने उन्हें “वेदों की ओर लौटो” का संदेश दिया तथा शुद्ध वैदिक ज्ञान की शिक्षा दी।

गुरु की आज्ञा से दयानन्द ने पूरे भारत का भ्रमण किया तथा वैदिक धर्म का प्रचार किया। उन्होंने मूर्तिपूजा, जन्म आधारित जाति-प्रथा, बाल-विवाह एवं अंधविश्वासों का तीव्र विरोध किया। 10 अप्रैल 1875 को मुंबई (तत्कालीन बंबई) में उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की। आर्य समाज का उद्देश्य वैदिक धर्म की शुद्धता की पुनर्स्थापना, सामाजिक सुधार, शिक्षा का प्रसार तथा राष्ट्र की एकता था। शीघ्र ही इसकी शाखाएँ पंजाब, उत्तर भारत एवं अन्य क्षेत्रों में फैल गईं। आर्य समाज ने शिक्षा (डीएवी संस्थाएँ), शुद्धि आंदोलन एवं स्वदेशी भावना के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वामी दयानन्द का देहावसान 30 अक्टूबर 1883 को अजमेर में हुआ।

सत्यार्थ प्रकाश का महत्व - स्वामी दयानन्द का सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथ **सत्यार्थ प्रकाश** (1875) है। यह उनके विचारों का मूल स्रोत है। इसमें दस समुल्लास हैं, जिनमें ईश्वर, वेद, धर्म, समाज, राज्य एवं शासन संबंधी विषयों की विस्तृत चर्चा की गई है। आठवें समुल्लास में राज्य, राजा (निर्वाचित सभापति), तीन सभाओं की व्यवस्था, विधि का शासन तथा स्वराज संबंधी राजनीतिक विचार स्पष्ट रूप से प्रतिपादित हैं। सत्यार्थ प्रकाश ने न केवल धार्मिक एवं सामाजिक सुधार का मार्ग प्रशस्त किया, बल्कि स्वराज एवं स्वदेशी की अवधारणाओं को भी लोकप्रिय बनाया। यह ग्रंथ आर्य समाज का आधार ग्रंथ बना तथा भारतीय राष्ट्रवादी चेतना के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसमें प्रस्तुत वैदिक प्रमाणों एवं तार्किक विश्लेषण ने दयानन्द के राजनीतिक चिंतन को सुदृढ़ वैचारिक आधार प्रदान किया।

स्वामी दयानन्द सरस्वती का राष्ट्रवादी चिंतन

स्वामी दयानन्द सरस्वती (1824-1883) आधुनिक भारत के प्रथम राष्ट्रवादी चिंतकों में से एक थे। उन्होंने 1876 में “भारत भारतीयों के लिए” का नारा दिया और स्वराज का उद्घोष किया। **सत्यार्थ प्रकाश** (षष्ठ समुल्लास) में उन्होंने स्पष्ट लिखा कि स्वदेशी राज्य सर्वोपरि एवं उत्तम होता है। विदेशी शासन चाहे कितना भी सुव्यवस्थित हो, वह स्वराज का स्थान नहीं ले सकता। उन्होंने विदेशी शासन की अप्रत्यक्ष किन्तु तीव्र आलोचना की। वे मानते थे कि ब्रिटिश शासन भारत की आर्थिक समृद्धि, सामाजिक एकता एवं सांस्कृतिक गौरव को नष्ट कर रहा है। आर्यों के आलस्य, प्रमाद एवं परस्पर विरोध को पराधीनता का मुख्य कारण बताते हुए उन्होंने आर्यावर्त में अखंड, स्वतंत्र एवं स्वाधीन भारत की आवश्यकता पर बल दिया। राष्ट्रीय एकता, स्वाभिमान एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान उनके चिंतन के केन्द्रीय तत्व थे। उन्होंने एक धर्म (वैदिक), एक भाषा (हिन्दी) एवं एक लक्ष्य (आर्यावर्त का उत्थान) पर जोर दिया। “वेदों की ओर लौटो” का नारा देकर उन्होंने मूर्तिपूजा, जाति-प्रथा एवं अंधविश्वासों का खंडन किया तथा भारतीयों में आत्मगौरव जागृत किया। आर्य समाज के माध्यम से शिक्षा, शुद्धि आन्दोलन एवं सामाजिक सुधारों को राष्ट्र निर्माण से जोड़ा।

स्वदेशी का समर्थन उनके राष्ट्रवाद का व्यावहारिक पक्ष था। वे स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग को धार्मिक एवं राष्ट्रीय कर्तव्य मानते थे। यह विचार बाद में स्वदेशी आन्दोलन एवं स्वतंत्रता संग्राम का आधार बना। लाला लाजपत राय, स्वामी श्रद्धानन्द, श्यामजी कृष्ण वर्मा आदि उनके विचारों से प्रभावित हुए।

राज्य, शासन एवं राजनीतिक व्यवस्था संबंधी विचार

दयानन्द के राजनीतिक विचार *सत्यार्थ प्रकाश* के षष्ठ समुल्लास में निहित हैं। वे राज्य को लोकहितकारी संस्था मानते थे, जिसका उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की प्राप्ति सुनिश्चित करना है। राज्य व्यक्ति के लिए है, व्यक्ति राज्य के लिए नहीं। राजा को उन्होंने वंशानुगत या निरंकुश नहीं, बल्कि **निर्वाचित सभापति** माना। राजा तीन सभाओं—विद्यासभा, धर्मसभा एवं राज्यसभा—के सहयोग से शासन करे। एक व्यक्ति को सम्पूर्ण सत्ता नहीं दी जानी चाहिए। राजा सभा के अधीन, सभा राजा के अधीन तथा दोनों प्रजा के अधीन रहें। प्रजा ही वास्तविक शक्ति है—“कृषक एवं मजदूर राजा के राजा हैं, राजा केवल उनका रक्षक है।”

कानून का शासन उनके चिंतन का आधार है। वे “दण्ड” (न्यायपूर्ण कानून) को वास्तविक राजा मानते थे। कानून सभी पर समान लागू होता है; राजा भी इसके ऊपर नहीं है। यदि राजा अन्याय करे तो उसे भी दण्ड मिलना चाहिए। शासन का लक्ष्य लोकहित होना चाहिए। जनता की भूमिका को उन्होंने सर्वोपरि माना। प्रजा शासन की वास्तविक आधार है। योग्य, विद्वान एवं धार्मिक व्यक्तियों से गठित सभाएँ शासन चलाएँ। प्रजा को शिक्षा एवं नैतिकता से सुसज्जित करके शासन में भागीदारी योग्य बनाया जाए। इस प्रकार दयानन्द का राष्ट्रवादी एवं राजनीतिक चिंतन वैदिक आदर्शों पर आधारित स्वराज, स्वदेशी, कानून-शासित शासन एवं प्रजा की सर्वोच्चता का समर्थन करता है। ये विचार भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के वैचारिक आधारों में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

सामाजिक सुधार एवं राजनीतिक चिंतन का अंतर्संबंध

स्वामी दयानन्द सरस्वती का राजनीतिक चिंतन सामाजिक सुधारों से अविभाज्य रूप से जुड़ा था। वे मानते थे कि सामाजिक दुर्बलता ही राष्ट्रीय पराधीनता का मूल कारण है। अतः समाज को सुधारे बिना स्वराज एवं राष्ट्रीय शक्ति असंभव है। उनके सामाजिक सुधारों का उद्देश्य एक संगठित, शिक्षित एवं स्वाभिमानी राष्ट्र का निर्माण करना था।

जाति प्रथा, स्त्री शिक्षा, विधवा विवाह एवं बाल विवाह विरोध

दयानन्द ने जन्मना जाति-प्रथा का तीव्र विरोध किया। वे गुण, कर्म एवं स्वभाव पर आधारित वर्ण-व्यवस्था का समर्थन करते थे। छुआछूत एवं अस्पृश्यता को वे वेद-विरुद्ध मानते थे। उन्होंने शूद्रों एवं स्त्रियों को वेदाध्ययन का अधिकार दिया तथा अंतर्जातीय विवाह का समर्थन किया। शुद्धि आन्दोलन के माध्यम से उन्होंने दलितोद्धार एवं धर्म परिवर्तन से लौटे लोगों को समाज में सम्मान दिलाने का प्रयास किया।

स्त्री शिक्षा पर उन्होंने विशेष बल दिया। वे मानते थे कि शिक्षित माता ही शिक्षित राष्ट्र का आधार है। गार्गी, मैत्रेयी आदि वैदिक स्त्रियों का उदाहरण देकर उन्होंने स्त्रियों को वेद पढ़ने एवं शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार सिद्ध किया। बाल विवाह का वे घोर विरोध करते थे। उनके अनुसार कन्या का विवाह न्यूनतम 16 वर्ष तथा पुरुष का 25 वर्ष की आयु के बाद होना चाहिए। विधवा विवाह का भी उन्होंने समर्थन किया, विशेषकर उन विधवाओं के लिए जिनका पूर्ण विवाह संस्कार नहीं हुआ था। सती प्रथा, बहुविवाह एवं पर्दा प्रथा को वे समाज के पतन का कारण बताते थे।

सामाजिक सुधार को राष्ट्रीय शक्ति का आधार मानना

दयानन्द का स्पष्ट मत था कि जाति-भेद, अशिक्षा, बाल विवाह एवं स्त्री-अधिकारों का अभाव भारत को आंतरिक रूप से कमजोर बनाते हैं। विदेशी शासन इन कमजोरियों का लाभ उठाकर शासन करता है। अतः सामाजिक एकता, समानता एवं नैतिक उत्थान राष्ट्रीय शक्ति का आधार हैं। आर्य समाज के दस सिद्धान्तों में सामाजिक कल्याण एवं सत्य का पालन प्रमुख स्थान रखता है। वे मानते थे कि सुधारित समाज ही स्वराज की नींव रख सकता है।

शिक्षा एवं चरित्र निर्माण का राजनीतिक महत्व

शिक्षा को उन्होंने राष्ट्र-निर्माण का सबसे शक्तिशाली साधन माना। गुरुकुल प्रणाली के माध्यम से वे चरित्र निर्माण, ब्रह्मचर्य, शारीरिक शक्ति एवं वैदिक ज्ञान पर बल देते थे। डीएवी स्कूलों एवं गुरुकुलों की स्थापना उनके अनुयायियों ने इसी दृष्टि से की। वे मानते थे कि शिक्षित एवं चरित्रवान नागरिक ही लोकतंत्र में सही भागीदारी कर सकते हैं तथा विदेशी शासन का विरोध कर सकते हैं। शिक्षा को उन्होंने स्वराज की तैयारी का अनिवार्य अंग बताया।

दयानन्द के विचारों का प्रभाव एवं प्रासंगिकता

आर्य समाज एवं स्वतंत्रता आंदोलन पर प्रभाव

आर्य समाज ने उत्तर भारत, विशेषकर पंजाब में राष्ट्रीय चेतना का प्रसार किया। लाला लाजपत राय आर्य समाज के सक्रिय सदस्य थे। उन्होंने दयानन्द की जीवनी लिखी तथा आर्य समाज को पंजाब में लोकप्रिय बनाया। डीएवी कॉलेजों के माध्यम से राष्ट्रीय शिक्षा का प्रसार हुआ। स्वामी श्रद्धानन्द, भाई परमानन्द, श्यामजी कृष्ण वर्मा, लाला हरदयाल, रामप्रसाद बिस्मिल, मदनलाल दींगरा आदि आर्य समाज से प्रभावित होकर स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय हुए। भगत सिंह के परिवार पर भी आर्य समाज का प्रभाव था। आर्य समाज ने स्वदेशी, हिन्दी एवं सांस्कृतिक स्वाभिमान को बढ़ावा देकर स्वतंत्रता संग्राम को वैचारिक आधार प्रदान किया।

आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद में योगदान

दयानन्द ने “भारत भारतीयों के लिए” एवं स्वराज का नारा देकर आधुनिक राष्ट्रवाद की नींव रखी। उन्होंने वैदिक अतीत को गौरवपूर्ण बताकर भारतीयों में आत्मविश्वास जागृत किया। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, स्वदेशी एवं शिक्षा पर उनका बल बाद के राष्ट्रवादी नेताओं के विचारों में दिखाई देता है। श्री अरविन्द एवं सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने उन्हें आधुनिक भारत के निर्माताओं में गिना।

समकालीन प्रासंगिकता

आज भी दयानन्द के विचार प्रासंगिक हैं। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, स्वदेशी अर्थव्यवस्था, शिक्षा में चरित्र निर्माण एवं सामाजिक समानता के उनके आदर्श वर्तमान चुनौतियों से मेल खाते हैं। स्त्री शिक्षा, बाल विवाह विरोध एवं जाति-आधारित भेदभाव के विरुद्ध उनके विचार आज भी सामाजिक सुधार आंदोलनों को दिशा देते हैं। डीएवी संस्थान एवं गुरुकुल परंपरा शिक्षा के क्षेत्र में उनके योगदान की निरंतरता दर्शाती है। स्वदेशी एवं आत्मनिर्भरता का उनका संदेश आधुनिक आर्थिक नीतियों से जुड़ता है।

इस प्रकार दयानन्द के सामाजिक सुधार एवं राजनीतिक चिंतन ने भारतीय समाज को आंतरिक शक्ति प्रदान की तथा स्वतंत्रता आंदोलन को नैतिक एवं वैचारिक आधार दिया। उनके विचार आज भी राष्ट्र-निर्माण में मार्गदर्शक हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध से यह स्पष्ट होता है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती आधुनिक भारत के राजनीतिक चिंतन के विकास क्रम में एक आधारभूत स्थान रखते हैं। *सत्यार्थ प्रकाश*, वेद-भाष्य तथा अन्य उपलब्ध स्रोतों के विश्लेषण से यह सिद्ध होता है कि उनके राजनीतिक विचारों के प्रमुख तत्व—स्वराज, स्वदेशी, राष्ट्रीय एकता, कानून का शासन, निर्वाचित सभापति की अवधारणा तथा लोकहित—वैदिक स्रोतों, विशेषकर वेद एवं मनुस्मृति की व्याख्याओं से गहरे जुड़े हुए हैं। उन्होंने वैदिक परंपरा को आधुनिक संदर्भ में पुनर्व्याख्यायित कर स्वराज एवं स्वदेशी की अवधारणाओं का प्रथम स्पष्ट उद्घोष किया। उनके विचार वैदिक आधार पर आधारित होते हुए भी आधुनिक लोकतांत्रिक तत्वों—प्रजा की सर्वोच्चता, कानून का शासन एवं सीमित शासन—से युक्त थे। आधुनिक भारत के राजनीतिक चिंतन के विकास क्रम में दयानन्द का स्थान राजा राममोहन राय के पश्चिमी-उन्मुख सुधारवाद एवं परवर्ती उग्र राष्ट्रवाद के बीच सेतु का है। उन्होंने सांस्कृतिक पुनरुत्थान को राजनीतिक स्वाधीनता का आधार बनाया। उनके विचारों ने उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारतीय राष्ट्रवादी चेतना के विकास में आधारभूत भूमिका निभाई। आर्य समाज के माध्यम से लाला लाजपत राय, स्वामी श्रद्धानन्द, श्यामजी कृष्ण वर्मा, भाई परमानन्द आदि नेताओं को वैचारिक बल मिला, जिससे स्वतंत्रता आंदोलन को दिशा एवं ऊर्जा प्राप्त हुई।

उनके राज्य, शासन, स्वराज, स्वदेशी एवं राष्ट्रीय एकता संबंधी अवधारणाएँ आज भी प्रासंगिक हैं। कानून का शासन, प्रजा की भागीदारी, चरित्र निर्माण पर आधारित शिक्षा तथा सांस्कृतिक स्वाभिमान वर्तमान लोकतांत्रिक एवं राष्ट्रवादी विमर्श में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इस प्रकार शोध प्रश्न एवं परिकल्पनाएँ तथ्यों द्वारा पुष्ट होती हैं।

प्रस्तुत शोध का योगदान

इस शोध का प्रमुख योगदान दयानन्द के राजनीतिक चिंतन का *सत्यार्थ प्रकाश* एवं वैदिक स्रोतों के आधार पर व्यवस्थित एवं विश्लेषणात्मक प्रस्तुतिकरण है। इससे आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद की वैचारिक जड़ों को स्पष्ट किया गया है तथा यह दर्शाया गया है कि स्वराज एवं स्वदेशी की अवधारणाएँ दयानन्द से ही आरंभ होती हैं। शोध समकालीन राजनीतिक विमर्श के लिए वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रदान करता है, जिसमें सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, स्वदेशी अर्थव्यवस्था एवं मूल्य-आधारित शासन व्यवस्था पर बल दिया गया है।

भविष्य के शोध हेतु सुझाव

1. दयानन्द के राजनीतिक विचारों का क्षेत्रीय अध्ययन (पंजाब, राजस्थान, गुजरात आदि) किया जाए, जिससे उनके प्रभाव की क्षेत्रीय विविधता स्पष्ट हो।
2. आर्य समाज की शाखाओं एवं स्वतंत्रता आंदोलन के क्रांतिकारी संगठनों (गदर पार्टी आदि) के बीच संबंधों का गहन दस्तावेजी अध्ययन आवश्यक है।
3. दयानन्द के विचारों की तुलना अन्य समकालीन सुधारकों (राजा राममोहन राय, ज्योतिबा फुले, स्वामी विवेकानंद) के साथ विस्तृत रूप से की जाए।

4. उनके शासन संबंधी विचारों का आधुनिक भारतीय संविधान एवं लोकतांत्रिक संस्थाओं से तुलनात्मक विश्लेषण किया जाए।
5. शुद्धि आन्दोलन एवं साम्प्रदायिक संबंधों का निष्पक्ष ऐतिहासिक अध्ययन किया जाए।

नीतिगत अनुशंसाएँ

1. शिक्षा नीति में दयानन्द द्वारा प्रस्तावित चरित्र निर्माण, मूल्य-आधारित शिक्षा एवं स्वदेशी ज्ञान प्रणाली को स्थान दिया जाए।
2. स्वदेशी एवं आत्मनिर्भरता के उनके विचारों को आर्थिक नीतियों में प्रोत्साहित किया जाए।
3. सामाजिक समानता एवं स्त्री शिक्षा संबंधी उनके आदर्शों को वर्तमान सामाजिक सुधार कार्यक्रमों में समाहित किया जाए।
4. सांस्कृतिक राष्ट्रवाद एवं राष्ट्रीय एकता के उनके दृष्टिकोण को राष्ट्रीय एकता अभियानों में शामिल किया जाए।
5. गुरुकुल एवं डीएवी जैसी संस्थाओं को आधुनिक शिक्षा प्रणाली के साथ समन्वित कर प्रोत्साहित किया जाए।

अपेक्षित योगदान

प्रस्तुत शोध से दयानन्द के राजनीतिक चिंतन का व्यवस्थित विश्लेषण प्रस्तुत हुआ है, जिससे आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद की वैचारिक जड़ें स्पष्ट हुई हैं। यह समकालीन राजनीतिक विमर्श के लिए वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रदान करता है, जो सांस्कृतिक स्वाभिमान, स्वदेशी एवं मूल्य-आधारित शासन पर आधारित है। शोध यह स्थापित करता है कि दयानन्द केवल धार्मिक सुधारक नहीं, बल्कि आधुनिक भारत के राजनीतिक चिंतक भी थे, जिनके विचारों का गहन अध्ययन भारतीय राजनीतिक चिंतन को समृद्ध बनाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. दयानन्द सरस्वती, स्वामी. *सत्यार्थ प्रकाश*. अजमेर: वैदिक यंत्रालय, (विभिन्न संस्करण, मूल 1875)।
2. दयानन्द सरस्वती, स्वामी. *ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका*. अजमेर: वैदिक यंत्रालय।
3. दयानन्द सरस्वती, स्वामी. *संस्कारविधि*. अजमेर: वैदिक यंत्रालय।
4. दयानन्द सरस्वती, स्वामी. *आर्याभिविनय*. अजमेर: वैदिक यंत्रालय।
5. मनु. *मनुस्मृति* (दयानन्द की व्याख्या सहित)।
6. सरदार, हरबिलास. *महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र*. अजमेर: वैदिक यंत्रालय।
7. विद्यालंकार, सत्यकेतु. *आर्यसमाज का इतिहास* (खंड 1-5)। नई दिल्ली: आर्य साहित्य मंडल।
8. उपाध्याय, गंगा प्रसाद. *स्वामी दयानन्द सरस्वती का निजमत*. जयपुर: सन्मति पुस्तकालय।
9. लाल, लाजपत राय. *महर्षि दयानन्द सरस्वती की जीवनी*, लाहौर/नई दिल्ली (पुनर्मुद्रण)।
10. शर्मा, रामगोपाल. *स्वामी दयानन्द का राजनीतिक चिंतन*, विभिन्न शोध लेख एवं पुस्तकें।
11. आर्य, जगदीश चंद्र. *दयानन्द का राष्ट्रवादी चिंतन*। दिल्ली: आर्य प्रकाशन।
12. गुप्ता, एस. पी. *आधुनिक भारत में सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन*। इलाहाबाद: किताब महल।
13. राय, रमेश चंद्र. *भारतीय राजनीतिक चिंतक*, दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।

14. शर्मा, बी. एल. *आर्य समाज एवं स्वतंत्रता आंदोलन*, जयपुर: राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
15. त्रिपाठी, अमलेश. *आधुनिक भारत का इतिहास* (सामाजिक-धार्मिक सुधार अध्याय), दिल्ली: राजकमल।
16. Saraswati, Dayananda. *Light of Truth (Satyarth Prakash)*. English Translation by Chiranjiva Bharadwaja. Ajmer: Vedic Yantralaya.
17. Jordens, J. T. F. *Dayananda Saraswati: His Life and Ideas*. Delhi: Oxford University Press, 1978.
18. Jones, Kenneth W. *Arya Dharm: Hindu Consciousness in 19th Century Punjab*. Berkeley: University of California Press, 1976.
19. Rai, Lala Lajpat. *A History of the Arya Samaj*. New Delhi: Publications Division (Reprint).
20. Heimsath, Charles H. *Indian Nationalism and Hindu Social Reform*. Princeton: Princeton University Press, 1964.
21. Farquhar, J. N. *Modern Religious Movements in India*. Delhi: Munshiram Manoharlal (Reprint).
22. Sharma, J. S. *Encyclopaedia of India's Struggle for Freedom*. New Delhi: S. Chand.
23. Political Thought of Swami Dayanand (Various academic theses and books available on Archive.org).
24. “महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का राष्ट्रवाद और स्वराज्य की अवधारणा” - विभिन्न शोध जर्नल्स (Zenodo एवं अन्य)।
25. “स्वामी दयानन्द का राजनीतिक चिंतन” - *Indian Journal of Political Science* एवं अन्य हिन्दी जर्नल्स।
26. आर्य समाज संबंधी शोध लेख - *पंचजन्य*, *आर्य समाज* पत्रिकाएँ एवं विश्वविद्यालय शोध प्रबंध।



EARN YOUR MBA

WWW.IIMPS.IN



Accreditation & Ranking



UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

☎ 011-41005174

RESEARCH
GATEWAY

STOP PLAGIARISM



Arogyam Ayurveda
Holistic Healing through herbs



AROGYAM
ONLINE

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

परिवर्तन

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD



BLUE

Calms your Child's
Mind & Body

YELLOW

Promotes Concentration,
Stimulates the Memory

PINK

Evokes Empathy,
makes your Child Calm

RED

Excites and energizes
your Child's body

GREEN

Improves Reading speed
and Comprehension

www.parivartan4u.com



परिवर्तन

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY**

ISSN – 2250 – 1959 (O) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMSST.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
COMMERCE, ARTS AND SCIENCE**

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES**

ISSN 2277 – 9809 (O) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE
ENGINEERING AND TECHNOLOGY**

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM



**INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION**

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM



**JOURNAL OF LEGAL STUDIES, POLITICS
AND ECONOMICS RESEARCH**

WWW.JLPER.COM

JLPE